International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 11, November 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal no: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बालिकाओं में नैतिक मूल्यों का विकास : एक अध्ययन

प्रो0 लक्ष्मेश्वर ठाकुर अवकाशप्राप्त एसोसियेट प्रोफेसर
मनोविज्ञान, बी.आर.अम्बेदकर बिहार विश्व विश्वविद्यालय,मुजफ्फरपुर
ज्योति (शोधार्थी) (शिक्षा शास्त्र)
बी0 आर0 ए0 बिहार विश्वविधालय मुजफ्फरपुर

प्रस्तावना

भारतीय परिवारों की बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के विकास में माता पिता की भूमिका बहुत अहम होती है। नैतिक मूल्य किसी भी व्यक्ति के सम्यक जीवन के लिए अत्यतं आवश्यक हैं इसके अभाव में जीवन जीना काफी कठिन हो जाता हैं। नैतिकता की व्याख्या समाज एवं संस्कृति के संदर्भ में किया जाता हैं। इसलिए नैतिक व्यवहार में किसी सार्वभौमिक मापदंड की कल्पना नहीं की जा सकती हैं। समाज की मान्यताओं और अपेक्षओं के अनुरुप सम्पन्न किया गया आचरण ही नैतिक व्यवहार हैं। जो व्यवहार व्यक्ति के अपने सामाजिक मान्यताओं के अनुसार व्यवहृत होता है उसे नैतिकता कहा जाता है और जो मान्य नियम का उल्लंघन करता है उसे अनैतिक व्यवहार समझा जाता है। नैतिकता का सम्प्रत्यय वस्तुतः एक सापेक्ष सम्प्रत्यय है और समाज एवं संस्कृति के संदर्भ में इसकी व्याख्या की जाती है। अलग अलग समाज में अलग– अलग नियम होते है इसलिए नैतिकता से संबधित व्यवहार के किसी सार्वभौमिक मापदंड की कल्पना नहीं की जा सकती। भारतीय समाज में स्त्रियों को तलाक देना सामाजिक दृष्टि से अनैतिक है लेकिन पाश्चात्य देशो में इसे अनैतिक नहीं समझा जाता है। नैतिकता वह मानसिक वृति है जिसकी सहायता से कोई व्यक्ति अच्छे–बुरे, सच–झूठ, वांछनिय–अवांछनिय तथा उचित–अनुचित के बीच अंतर कर पाता है।

नैतिक व्यवहार जन्मजात नहीं होता है बल्कि यह सामाजिक परिवेश में अर्जित किया जाता है। प्रारंभ में बालिकाएं अपने परिवार पड़ोस और पाठशालाओं में नैतिक आचरण की औपचारिक शिक्षा पाती है परन्तु जैसे–जैसे वह किशोरावस्था में पहुचती है उनमें विवेक का उदय होता है और वह विवेक द्वारा निर्देशित होकर नैतिक व्यवहार की ओर प्रवृत होती है। जब नैतिक व्यवहार के बाह्य स्रोत हो जाते है और बालिकाएं आन्तरिक विवेक द्वारा प्रेरित होकर अच्छा बनने का प्रयास करती है तभी उनके भीतर वास्तविक नैतिकता का विकास होता है।

नैतिकता की प्रवृति स्थिर न होकर परिर्वतनशील होती है। हरलॉक का कथन है कि – " समूह के द्वारा नियत किए गए कोड के अनरुप व्यवहार करना ही नैतिक वयवहार है।" नैतिकता संबंधी नियम धार्मिक विश्वासों, नियमो, आस्था, न्याय, सत्यता, पवित्रता एवं तार्किकता के साथ ही सामाजिक परीस्थितियों की आवश्यकताओं से होता है। नैतिकता का व्यवहार व्यक्ति समाज में रहकर अर्जित करता है। नैतिक मूल्य क्या है ? नैतिक मूल्य वास्तव में ऐसी सामाजिक अवधारणा है जिसका मूल्यांकन किया जा सकता है। यह कर्तव्य की आंतरिक भावना है और उन आचरणों के प्रतिमाानों का समन्वित रुप है जिसके आधार पर सत्य–असत्य, अच्छा–बुरा, उचित–अनुचित का निर्णय किया जा सकता है और यह विवेक के बल से संचालित होता है। इसमें वह व्यवहार आते है जिस तरह के व्यवहार की समाज उनसे आशा करता है। समाज की इन आशाओं के प्रतिमानो में भिन्नता आयु एवं यौन भिन्नता के कारण होता है। इन भिन्नताओं के रहते हुए भी समूह या समाज का जो नैतिक प्रावधान होता है वह बालिकाओं को नियंत्रित एवं निर्देशित करता है तथा उन पर दबाव डालता है। जब बालिकाए समाज के प्रतिमानों, परंपराओ एवं प्रावधानो का अनुसरण कर उन्हीं के अनुरुप आचरण करना शुरु कर देती है तो उसे नैतिक व्यवहार की संज्ञा दी जाती है लेकिन जानबुझ कर उसे तोड़ती है तो उसे अनैतिक व्यवहार कहा जाता है। मोरल शब्द 'मोरेस' शब्द से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ प्रथाए, लोकरीतियॉ, या रीतिरिवाज से है। बालिकाओं में यह देखा गया है कि कोई भी बालिका अपने समाज के सभी नैतिक मूल्यों, गुणो को नहीं जानती है जब वह किशोर हो जाती और इस अवस्था में वह समाज के नैतिक मूल्यों के अनुसार व्यवहार नहीं करती है तो यह माना जाता है की वह समाज के प्रत्याशाओं के अनुसार या तो वह व्यवहार करना नहीं चाहती है या तो उन्हें समाज की प्रत्याशा ज्ञात नहीं है। बालिकाओं में नैतिक विकास के दो पक्ष होते है–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 11, November 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal no: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1) बौद्धिक पक्ष

2) भावात्मक पक्ष

इस संदर्भ में विभिन्न मनोवैज्ञानिको ने अपने–अपने विचारो को व्यक्त किया है। हरलॉक ने इस संदर्भ में कहा है कि –"सामाजिक समूहो में नैतिक संहिता के प्रति अनुरुपता ही नैतिकता है। इसकी उत्पति लैटिन भाषा की मोरेस शब्द से हुई है जिसका अर्थ प्रथाए, लोकरीतियॉ या शिष्टाचार से है।" सर हरबर्ट रीड ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि – "वास्तविक नैतिकता स्वतः चालित होनी चाहिए उनके कहने का तात्पर्य है कि जो दाए हाथ द्वारा करना है वह बाएँ हाथ तक को पता नहीं चलना चाहिए।" जोन्स ने भी इस संदर्भ में विचार व्यक्त किया है उनके अनुसार – "निश्चित समय या स्थान के आदर्शो के प्रति अनुरुपता का प्रदर्शन ही नैतिकता है।"

इस प्रकार बालिकाओं के नैतिक विकास के संबंध में उपर वर्णित तथ्यो के आधार पर नैतिकता की भूमिकाएं स्पष्ट हो रही है।

क्षेत्रः– मुजफ्फरपुर शहर के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं को सम्मलित कर अध्ययन किया गया।

प्रतिदर्श :– इस अध्ययन हेतू मुजफ्फरपुर शहर में स्थित विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर की छात्राओं का चयन प्रतिदर्श के रुप में किया गया।

उपकरण एवं मापनी :– नैतिक व्यवहार परीक्षण हेतू त्रिपाठी एवं अम्बष्ठ के द्वारा निर्मित 5 बिन्दू मापनी है। इस मापणी का निर्माण मुख्य रुप से हिन्दी में किया गया है। इस परीक्षण में 10 प्रश्न दिए गए है। इसमें अधिक से अधिक 50 अंक तथा निम्नतम 10 अंक की संभावना है। उत्तरदाताओं के उत्तर के आधार पर नैतिक व्यवहार का पता लगाया जा सकता है या नैतिक मूल्य ज्ञात किया जा सकता है।

परिणाम :– नैतिक विकास को मापने के लिए 200 स्नातक स्तरीय बालिकाओं के प्रतिदर्श पर अध्ययन किया गया। त्रिपाठी एवं अम्बष्ठ के द्वारा निर्मित सर्वेक्षण संबंधित तथ्य सेक्सन परीक्षण को संचालित किया गया। इस मापनी के आधार पर अधिकतम तथा न्यूनतम प्राप्तांक कमशः 50 एवं 10 की संभावना है। 200 बालिकाओं के प्रापतांको का वितरण सारिणी संख्या 1 में वर्णित है।

सारिणी संख्या – 1

मध्यमान	मध्यांक	बहुलांक	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान की प्रमाणिक त्रुटि
32.45	33.00	34.00	6.75	0.45

आवृति का मध्यमान 32.45, मध्यांक 33.00, बहुलांक 34.00 तथा प्रमाणिक विचलन 6.45 पाया गया है। प्रतिदर्श से प्राप्त आकडे ये प्रदर्शित करते है कि बालिकाओं के उस प्रतिदर्श में नैतिक विकास का प्रसामान्य वितरण पाया गया है। प्रतिदर्श कि प्रमाणिक त्रुटि 0.45 है अतः 95 प्रतिशत विश्वास के साथ यह अनुमानित किया जाता है कि यह प्रतिदर्श मध्यमान वास्तविक जनसंख्या मध्यमान से अधिक से अधिक $2.58 \times 0.45 = 1.16$ के प्रसार के अनर्तगत ही है। (गैरेट) पेज 151,186 उपर के सांख्यिकीय विश्लेषण से नैतिक विकास चर के संबंध में निष्कर्ष प्राप्त किया गया है कि–

क) प्रतिदर्श के नैतिक विकास प्राप्तांक का वितरण जनसंख्या के प्रसामान्य वितरण सिद्धान्त के अति निकट एवं अनुकूल है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 11, November 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal no: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ख) प्रतिदर्श का नैतिक विकास और मध्यमान जनसंख्या के वास्तविक मध्यमान के इतने निकट है कि उसे जनसंख्या के मध्यमान के रुप में स्वीकार किया जा सकता है।

निष्कर्षः–

उपर का निष्कर्ष यह प्रमाणित करता है कि नैतिक विकास चर जनसख्या में सामान्य रुप से वितरित नहीं है एक ओर जहॉ कुछ बालिकाएं उच्च नैतिक विकास के अन्तर्गत आती है वहीं कुछ बालिकाएं न्यूनतम नैतिक विकास को प्रदर्शित करती है लेकिन यह भी साबित होता है कि जनसंख्या का बहुत बडा भाग मध्यम प्रवृति अर्थात् दोनो छोरो के बीच पायी जाती है।

संदर्भः–

1.हरलॉक - चाइल्ड डेवलपमेंट, मैक ग्रॉ हिल बुक कंपनी, न्यूयॉर्क और लंदन

2.हरलॉक - विकासात्मक मनोविज्ञान, मैक ग्रॉ हिल बुक कंपनी, न्यूयॉर्क और लंदन

3.कोलबर्ग एल. और ज्यूरियल ई. - जीएस लेज़र में नैतिक विकास और नैतिक शिक्षा, ग्लेनवीस, मनोविज्ञान और शिक्षा अभ्यास।

4.वी. जोन्स - बच्चों में चरित्र विकास: एल. कार्नाचिल (एड) मैनुअल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी रिव, एड, न्यूयॉर्क में एंज ओलेक्टिर: विली 1954 पी.781

5.गैरेटी, एच.ई. (1955) - मनोविज्ञान और शिक्षा में संतुष्टि (चौथी शिक्षा) लॉन्गमैन, ग्रीन एंड कंपनी न्यूयॉर्क